9

बाल विकास की अवस्थाएँ :
– 3 वर्ष से 6 वर्ष तक
– 6 वर्ष से 8 वर्ष तक

जब बच्चे 3–6 वर्ष की उम्र के दायरे में होते हैं, वे प्री–स्कूल में जाने के लिए तैयार हो चुके होते हैं। जैसे ही बालक 6–8 वर्ष के दायरे में पहुँचते हैं, वे पूर्व प्राथमिक अवस्था में चिह्नित किये जाते हैं।

पिछले अध्याय में आपने भ्रूण विकास, शिशुओं के जन्म और उनके शैशवास्था के विषय में पढ़ा। आपने जन्म से तीन वर्ष तक के विकास के विभिन्न पड़ावों के बारे में भी पढ़ा। प्रस्तुत अध्याय में आप शैशव अवस्था, पूर्व विद्यालयी अवस्था और पूर्व प्राथमिक अवस्था के विभिन्न पक्षों में विकास के स्वरूप के बारे में जानेंगे।

आइए, इनके बारे में विस्तार से जानते हैं।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप–

- 3–6 वर्ष के बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं और आवश्यकताओं की व्याख्या करते हैं;
- 3–6 वर्ष के बच्चों में विभिन्न क्षेत्रों में संबंधित विकास के पड़ावों के संदर्भ में उनका वर्णन करते हैं;
- 6–8 वर्षों के दौरान बाल विकास के पहलुओं का वर्णन करते हैं;
- 6–8 वर्ष के बच्चों की विशेषताओं और विकासात्मक आवश्यकताओं का वर्णन करते हैं; और
- बच्चे के विकास में खेल के महत्व की चर्चा करते हैं।

टिप्पणी

9.1 3-6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों का विकास

पूर्व-विद्यालयी अवस्था माँसपेशियों के विकास तथा समन्वयन प्राप्त करने का समय है। इसी समय बालकों में सोचने और बोलने की योग्यताएँ भी विकसित होती हैं। उनकी अवलोकन क्षमता, स्मरण शक्ति और शाब्दिक योग्यताओं में तेजी से परिवर्तन होता है जो उन्हें अपने चारों तरफ के संसार को अच्छी तरह समझने में मदद करता है। पूर्व-विद्यालयी बच्चे स्वयं को अपने आस-पास के परिवेश के अनुकूल बनाने के योग्य हो जाते हैं। पूर्व-विद्यालयी वर्षों में बच्चे अनिवार्य जीवन कौशल जैसे कि स्वयं कपड़े पहनना, भोजन करना आदि सीखते हैं और इस प्रकार कई बातों में आत्मनिर्भर होकर बढ़ने लगते हैं। इसी समय स्कूल जाने की तैयारी में बच्चे अपने माता-पिता और परिवार से अलग होना सीखते हैं।

नीचे के खंडों में पूर्व-विद्यालयी बच्चों के शारीरिक-गत्यात्मक, सामाजिक-संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और भाषायी विकास का वर्णन किया गया है।

9.1.1 शारीरिक और गत्यात्मक विकास

3 से 6 वर्ष की आयु समूह के बच्चों में, नवजात शिशुओं की अपेक्षा वृद्धि धीमी गति से होती है, पर स्थिर रहती है। उनकी माँसपेशियों के विकास और समन्वयन में हो रही वृद्धि यह सुनिश्चित करती है कि वे शारीरिक रूप से अब ऐसे बहुत-से काम कर सकते हैं जो वे पहले नहीं कर सकते थे। 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के भार में प्रतिवर्ष लगभग 4 से 5 पौंड तथा कद में दो से तीन इंच की वृद्धि होती है। अब उन्हें पहले से कम नींद की आवश्यकता होती है। इस अवस्था में बच्चों की मांसपेशियों और अस्थियों में वृद्धि होती है और वे शारीरिक दृष्टि से अधिक मजबूत और ताकतवर हो जाते हैं। उनके श्वसन, रक्त परिभ्रमण और उत्सर्जन तंत्रों की क्षमताओं का विकास होता है जिससे उनमें गत्यात्मक कौशलों के विकास को बढ़ावा मिलता है।

जैसे-जैसे उनके आँख-हाथ का समन्वयन बेहतर होता है उनमें दौड़ने, फेंकने, कूदने, उछलने की क्षमता विकसित होती है। इन स्थूल गत्यात्मक कौशलों के साथ सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल जिनमें माँसपेशियों की सूक्ष्म गतिविधि होती है, का प्रयोग करने में भी सक्षम हो जाते हैं। क्योंकि अब वे अपनी छोटी माँसपेशियों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करने लगते हैं। अत: अब वे क्रेयान से चित्र बनाना, चम्मच से खाना, बटन बंद करना और जूते के फीते बाँधना, आदि कार्यों में कुशल हो जाते हैं। आपने देखा होगा कि पूर्व-विद्यालयी बच्चों के घरों की दीवारें रंगों से बने चित्रों से भरी होती हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि पूर्व-विद्यालयी बच्चा शारीरिक रूप से समन्वयन कर लेता है, और दीवार तक पहुँचकर अपनी सूक्ष्म गत्यात्मक माँसपेशियों का प्रयोग करते हुए दीवार पर चित्र बना लेता है। इस आयु तक प्राप्त हो जाने वाले कुछ स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल इस प्रकार हैं-

स्थूल गत्यात्मक कौशल

- दौड़ने, भागने, कूदने, फेंकने, किक मारने में अधिक दक्ष होना

टिप्पणी

- उछलती गेंद को पकड़ना
- साइकिल के पैडल चलाना (3 वर्ष), साइकिल को चलाते हुए इधर-उधर मोड़ना (4 वर्ष)
- एक पैर से उछलना (लगभग 4 वर्ष) और बाद में पाँच सैकेंड तक एक पैर पर संतुलन बनाना
- एड़ी एवं पंजों पर चलना। (लगभग 5 वर्ष में)

सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल

- वृत, वर्ग एवं त्रिभुज की आकृति बनाना
- बिना धारवाली कैंची का प्रयोग प्रारंभ करना तथा सीधी लाइन पर कैंची से काटना
- किसी की देखरेख में स्वयं कपड़े पहनना
- ठीक से कपड़े पहनना
- खाते समय चम्मच एवं काँटे को ठीक से पकड़ना
- छुरी से मक्खन, जैम, आदि फैलाना

9.1.2 सामाजिक और संवेगात्मक विकास

सामाजिक और संवेगात्मक विकास में पूर्व-विद्यालयी बच्चों की स्वयं के बारे में समझ, उनकी भावनाओं और दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाना आदि उनके सामाजिक और गत्यात्मक विकास का हिस्सा हैं। पूर्व-विद्यालयी बच्चे अकसर सोचते हैं कि 'वे कौन हैं'। यह 'मैं' के रहस्य से जुड़ा पहला प्रश्न है। हमारा **'आत्म-प्रत्यय'** हम कौन हैं, हम अपनी योग्यताओं को कैसे देखते हैं? अपना वर्णन करने के लिए हम किन गुणों या विशेषताओं का वर्णन करते हैं, आदि से मिलकर ही बनता है।

'टॉडलर' अवस्था में बच्चों में आत्मजागरूकता आ जाती है। जब बच्चे पूर्व-विद्यालयी अवस्था तक पहुँचते हैं तो उनकी अपने बारे में जानकारी में विस्तार और व्यापकता आ जाती है। वे स्वयं के बारे में बताने के लिए अनेक विशेषताएँ जोड़ लेते हैं। वे अधिकतर ध्यान दिए जाने योग्य मूर्त और शारीरिक विशेषताओं पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अपने बारे में बताते हुए अकसर अपने नाम, अपनी चीजों, खिलौनों और घर के सदस्यों के बारे में ही बताते हैं। वे अपनी आयु वाली उपलब्धियों की चर्चा करते हैं, जैसे 'मैं तेज दौड़ता हूँ।'

इस आयु में लैंगिक पहचान भी होने लगती है। इस आयु के बच्चे अपने आप को 'लड़का'-'लड़की' में वर्गीकृत करने के योग्य हो जाते हैं और अपने लिंग के अनुसार ही कपड़े पहनना या सजना-सँवरना पसंद करते हैं। वे लिंग के मुताबिक सही भाषा का प्रयोग करते हैं और उनके खेलों में भी लैंगिक भिन्नता नज़र आने लगती है।

टिप्पणी

पूर्व-विद्यालयी बच्चे दूसरे बच्चों के साथ खेलने एवं काम करने के लिए आवश्यक सामाजिक कौशल सीखते हैं। यद्यपि 4-5 वर्ष के बच्चे नियमों के अनुसार खेलना शुरू कर देते हैं, किंतु अकसर किसी 'प्रभावशाली' बच्चे के कहने पर उनके ये नियम बदल जाते हैं।

पूर्व-विद्यालयी बच्चे अपनी भावनाओं को समझना प्रारंभ कर देते हैं और उनके बारे में बात कर सकते हैं। वे समझते हैं कि कुछ परिस्थितियों में संवेगों में तीव्रता आ सकती है तथा अब वे अपने संवेगों को शब्दों में कह सकते हैं या व्यक्त कर सकते हैं। इसके लिए उनके पास शब्द भंडार होता है। यह भी कहा जाता है कि इस अवस्था में हो सकता है कि बच्चे जटिल संवेगों को न समझ पाएँ या बोलकर अभिव्यक्त न कर पाएँ। अत: ऐसे में उन्हें अपने संवेगों को नियंत्रित करने या सँभालने के लिए माता-पिता या बड़े लोगों की सहायता की आवश्यकता हो सकती है। यद्यपि वे अपनी भावनाओं को सँभालना सीख लेते हैं और दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील भी होते हैं तथापि कई बार यह भी हो सकता है कि अधिक उग्र या शर्मिंदा होने पर वे यह न समझ सकें कि उन्हें क्या करना चाहिए।

एरिक्सन (1950) के अनुसार यह वह अवस्था है जब बच्चा योजना बनाने में पहल करना चाहता है या स्वयं अपने लिए काम करना चाहता है। ऐसा करने से उसमें सकारात्मक की भावना आती है। यदि बच्चे को स्वयं कुछ करने से बार-बार रोका जाए तो उसमें अपराध-बोध की भावना पैदा हो सकती है और यह बच्चे की आत्म-प्रत्यय के लिए हानिकारक हो सकता है।

पूर्व-विद्यालयी बच्चों के कुछ सामाजिक-संवेगात्मक कौशल इस प्रकार हैं-

- अपने बारे में बताना
- आत्म-प्रत्यय का उभरना
- अपनी भावनाओं और संवेगों के बारे में बात करना
- जटिल संवेगों, जैसे अपराध बोध, शर्म, गर्व, आदि का उभरना
- कहानी सुनाना और घटनाओं का वर्णन करना
- पहल, जिज्ञासा और अन्वेषण या खोज-बीन को प्रदर्शित करना

9.1.3 संज्ञानात्मक विकास

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि पूर्व-विद्यालयी बच्चे अकसर अपने आस-पास के संसार के बारे में बहुत से प्रश्न करते हैं। कई बार वे मूलभूत तर्क देते हैं और कई बार किसी स्थिति में असमंजस में पड़ जाते हैं। पूर्व-विद्यालयी बच्चों की आस-पास के संसार के प्रति बढ़ती जागरूकता, तर्क और अंतर्दृष्टि आदि उनको समझने में सहायक सिद्ध होती हैं।

इस खंड में हम विस्तृत रूप से पढ़ेंगे कि पूर्व-विद्यालयी बच्चों में ज्ञान का विकास कैसे होता

टिप्पणी

है, कैसे उनकी बढ़ती संज्ञानात्मक योग्यताएँ अपने आस-पास के संसार को समझने में उनकी सहायता करती हैं।

शैशवावस्था के अंत तथा पूर्व-विद्यालय के प्रारंभ में बच्चों के विचारों की जटिलता में काफी वृद्धि होती है। जीन पियाजे के अनुसार 2-7 वर्ष की आयु के बीच की अवधि पूर्व-सक्रियात्मक अवस्था कहलाती है। इस अवस्था में उनकी सोच अतार्किक, अव्यवस्थित और कठोर होती है। एक अन्य योग्यता जो विशेष रूप से पूर्व-विद्यालयी बच्चों में विकसित होती है, वह है **प्रतीकात्मक सोच** में डूबना यानी उन्हें किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना के बारे में सोचने के लिए उसके वास्तविक संपर्क में होने की आवश्यकता नहीं होती। वे किसी वस्तु या व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं और अपनी सादृश्यमूलक योग्यताओं का उस वस्तु या व्यक्ति का स्मरण करने और उसके गुणों के बारे में निष्कर्ष निकालने में प्रयोग करते हैं।

प्रतीकात्मक कार्य : पूर्व विद्यालयी बच्चों में प्रतीकों जैसे शब्द या संख्या का प्रयोग करके इन वस्तुओं का नाम बताने की योग्यता होती है। इस प्रकार प्रतीकों का प्रयोग बच्चों को किसी वस्तु की मूर्त उपस्थिति से मुक्ति दिलाता है और वे उनके बारे में याद रख सकते हैं और सोच सकते हैं। प्रतीकों, शब्दों और अंकों के माध्यम से उन चीजों के नाम बताने की क्षमता उनमें होती है।

स्थानिक चिंतन : इस आयु वर्ग के बच्चे स्थानिक संबंधों को पहले से थोड़ा और अच्छी तरह समझने लगते हैं। वे यह बात समझ सकते हैं कि एक चित्र किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है जो भले ही सामने न हो, पर उसका अस्तित्व है। हो सकता है कि वे चित्र और वास्तविक वस्तु के बीच के संबंध को ठीक से न समझ सकें।

कार्य-कारण संबंध : इस अवस्था में बच्चे जानी-पहचानी समान घटनाओं के कारण सोच पाने के योग्य होते हैं, जैसे कि वे सोच सकते हैं कि सभी सजीव वस्तुएँ पोषण मिलने पर आकार में बढ़ती हैं। वे अपने प्राकृतिक परिवेश के अवलोकन के आधार पर या अपने माता-पिता या दूसरों से ऐसी घटनाओं के बारे में सुनकर इन तर्कों पर पहुँचते हैं। वे अभी भी कार्य-कारण के बारे में तर्कपूर्ण उत्तर नहीं दे सकते। एक ही स्थान और समय पर हुई दो घटनाओं का कारण और प्रभाव मानकर जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए– एक पूर्व-विद्यालयी बच्चा सोच सकता है कि उसने अपने भाई/बहन के बारे में बुरा सोचा इसलिए वह बीमार पड़ गया/गयी। अपने सहोदर के संबंध में बुरा सोचने और उसी समय उसके बीमार पड़ जाने के कारण बच्चे ने एक गलत धारणा बना ली कि दोनों घटनाएँ आपस में जुड़ी हैं और एक घटना दूसरी का कारण है।

वर्गीकरण और समानताएँ : वर्गीकरण का संबंध बच्चे की वस्तुओं में समानताएँ और असमानताएँ पहचानने की योग्यता से है। इस अवस्था में बच्चों में पूरी समझ विकसित नहीं हो पाती पर वे वस्तुओं को 'अच्छा-बुरा', 'दोस्त-दोस्त नहीं', 'खाने योग्य-न खाने योग्य', बर्तन, फर्नीचर, आदि के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त इस अवस्था में बच्चे वर्गीकरण में पूरी तरह कुशल नहीं होते। वे निर्जीव वस्तुओं में भी सजीव वस्तुओं जैसी विशेषताएँ बता सकते हैं और उन्हें सजीव ही मान लेते हैं। पियाजे ने इस संज्ञानात्मक कमी को **एनीमिज्म** (animism) का नाम दिया है।

आपने 'विकास के आयाम' पाठ में पढ़ा है कि पूर्व-विद्यालयी बच्चों में पहचानने की समझ विकसित होती है यानी वे यह समझते हैं कि व्यक्ति या वस्तुओं का बाह्य रंग-रूप, आकार या आकृति बदल जाने पर भी वे वैसे ही रहती हैं। यह उन्हें अपने आस-पास के संसार में व्यवस्था और पूर्वानुमेयता को देखने-समझने में मदद करती है। किंतु प्री-स्कूल बच्चों की पहचानने की समझ पूरी तरह विकसित नहीं होती। इस अवस्था के बच्चों में विपरीत या पलटकर सोचने की शक्ति (Reversability) का भी अभाव होता है। पूर्व-विद्यालयी बच्चे यह नहीं समझ पाते कि किसी कार्य को पलटकर भी किया जा सकता है और एक व्यक्ति पलटकर उसी स्थान पर पहुँच सकता है जहाँ से उसने प्रारंभ किया था। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जो छोटे और चौड़े गिलास की अपेक्षा लंबे तथा पतले गिलास में पानी पीने का हठ करता है यह नहीं समझता कि छोटे चौड़े गिलास से पानी को लंबे गिलास में पलटा जा सकता है और तब दोनों गिलासों में पानी की मात्रा समान दिखेगी।

आत्मकेंद्रिता : पियाजे के अनुसार, पूर्व-विद्यालयी बच्चे अपने दृष्टिकोण पर ही केंद्रित होते हैं और दूसरे के नजरिये को नहीं समझते। इसका अध्ययन करने के लिए पियाजे ने एक 'थ्री माउंटेन टास्क' का प्रारूप बनाया जिसमें जहाँ बच्चा बैठा था, ठीक उसके सामने एक गुड़िया को रख दिया। बच्चे से पूछा गया कि गुड़िया को सब चीजें कैसी दिख रही होगी। पियाजे को पता चला कि बच्चे ने यह नहीं बताया कि गुड़िया को चीजें कैसी दिख रही होंगी, बल्कि उसने अपने नजरिये या परिप्रेक्ष्य से उत्तर दिए और अपने दृष्टिोण से कल्पना की। इसे ही आत्मकेंद्रिता कहते हैं।

आयु के साथ-साथ बच्चों की संज्ञानात्मक योग्यताएँ बढ़ती जाती हैं और वे अपनी सीमाओं पर काबू पा लेते हैं।

आइए, अब पूर्व-विद्यालयी बच्चों में भाषिक विकास को समझें।

9.1.4 भाषिक विकास, संप्रेषण एवं उभरती साक्षरता

जैसा कि इस अध्याय में पहले कहा गया है कि पूर्व-विद्यालयी बच्चों के पास प्रश्न बहुत होते हैं। प्रश्न पूछना केवल बढ़ती संज्ञानात्मक योग्यताओं के कारण ही नहीं होता, बल्कि बच्चों द्वारा अर्जित भाषिक योग्यताओं के कारण भी संभव होता है। इस अवस्था में उनके शब्द भंडार में वृद्धि होती है और वे प्रतिदिन की बातचीत में शब्दों को ज़्यादा आसानी से समझने और प्रयोग करने योग्य हो जाते हैं। पूर्व विद्यालयी बच्चे पहली बार सुने गए कठिन शब्दों के अर्थ को शीघ्रता से समझ लेते हैं। इसे तीव्र प्रतिचित्रण कहते हैं। इससे वे शब्दों को जल्दी समझ लेते हैं। उनमें एक सहज प्रवृत्ति भी होती है जिसके द्वारा वे शब्दों से वाक्य बनाना सीखते हैं।

पूर्व-विद्यालयी अवस्था तक आते-आते बच्चे दो से तीन शब्दों के वाक्य बना लेते हैं। वे सही ढंग से वाक्य बनाने की कोशिश करते हैं। तीन वर्ष की आयु में वे बहुवचन, भूतकाल, संबंध वाचक आदि का प्रयोग करना प्रारंभ कर देते हैं। वे 'मैं', 'मुझे', 'तुम', 'हम' आदि का उपयुक्त प्रयोग अपनी दैनिक बातचीत में करने लगते हैं।

इस अवस्था में बच्चे भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में कुशल हो जाते हैं। इसे व्यवहारशीलता कहते हैं। वे समझते हैं कि किससे, कैसे बात करनी है। भाषा के सामाजिक पक्ष में कुशलता

टिप्पणी

आती है। वे सामाजिक नियमों को समझते हैं और अपनी माँगे रखने के लिए लंबे वाक्यों के प्रयोग करने और कहानी कहने में निपुण हो जाते हैं। यदि वे देखते हैं कि दूसरे उनकी बात नहीं समझ रहे हैं तो वे अपनी बात दोहराते हैं या अलग तरीके से कहने का प्रयास करते हैं।

सभी बच्चे एक नियमित विकास पथ का पालन नहीं करते। कुछ बच्चों का भाषिक विकास कुछ देर से भी हो सकता है। कुछ बच्चे देर से बोलना शुरू करते हैं। जीवन के शुरुआती दिनों में पर्याप्त भाषायी प्रोत्साहन मिलने पर बच्चों का भाषायी विकास ठीक होता है।

पूर्व-विद्यालयी बच्चों की भाषिक कुशलताओं का सारांश निम्नलिखित है-

- सर्वनामों और सम्बन्ध वाचकों का उपयुक्त प्रयोग करना
- तीन शब्दों के साधारण वाक्यों का प्रयोग करना
- आकार संबंधों जैसे कि 'छोटा', 'बड़ा', आदि, को प्रकट करना
- तीन चरण वाले आदेशों का पालन करना
- दस तक गिनना
- चार रंगों के नाम बताना
- शिशु गीतों और शब्द खेलों का आनंद लेना
- 'क्यों' वाले प्रश्नों के उत्तर देना
- स्वयं से बातें करना

पाठगत प्रश्न 9.1

रिक्त स्थान भरिए-

(क) निर्जीव वस्तुओं में सजीव वस्तुओं के गुण बताना.....कहलाता है।

(ख) .....का संबंध बच्चों की वस्तुओं में समानता और विभिन्नता पहचानने की योग्यता से है।

(ग) पूर्व-विद्यालयी बच्चे पहली बार सुने गए किसी कठिन शब्द का अर्थ वाक्य के संदर्भ से जल्दी से अर्थ समझ लेते हैं। इसे.....कहते हैं।

(घ) .....भाषा के व्यावहारिक प्रयोग की चर्चा करता है।

9.2 6-8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों का विकास

मध्य बाल्यावस्था में बच्चे के जीवन में बहुत परिवर्तन आते हैं। इस समय शारीरिक, सामाजिक और संज्ञानात्मक कौशलों का तेजी से विकास होता हैं। संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से इस समय बच्चे याद करने और अधिक सीखने के योग्य हो जाते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में विश्वास विकसित करने तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने और परिश्रम करने के लिए यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। अब परिवार से अलग आत्म-निर्भर होना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। स्कूल जाने के कारण इस आयु के बच्चे अब बाहर के विस्तृत संसार के संपर्क में आते हैं। मित्रता अधिक महत्वपूर्ण होती जाती है तथा साथी-बच्चे अब उनके जीवन में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना शुरू कर देते हैं।

आइए, अब पूर्व प्राथमिक अवस्था के विकासात्मक पड़ावों पर नजर डालें।

9.2.1 शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

इस अवस्था में बच्चे 1 से 3 इंच प्रति वर्ष बढ़ते हैं। 8 से 9 वर्ष की आयु में तेजी से उनका भार बढ़ता है। छोटी माँसपेशियों की अपेक्षा उनकी हाथ और पैरों की बड़ी माँसपेशियाँ अधिक विकसित होती हैं। इस अवस्था में बच्चे बहुत-से शारीरिक खेल खेलते हैं और एक बच्चा गेंद को टप्पे देता हुआ दौड़ सकता है परन्तु एक ही समय पर दोनों कार्य करना उसके लिए कठिन हो सकता है।

चित्र 9.1 : बाह्य खेलों से शारीरिक विकास

उम्र के इस पड़ाव की बच्चों की कुछ शारीरिक क्षमताएँ निम्नलिखित हैं:

- धीमी परन्तु निरन्तर वृद्धि
- मांसपेशियाँ और अधिक मजबूती

टिप्पणी

- 'बेबी फैट' की कमी
- मांसपेशियों में वृद्धि
- शारीरिक संचालन पर नियंत्रण शक्ति का विकास

9.2.2 सामाजिक और संवेगात्मक विकास

इस अवस्था में बच्चों का आत्म-प्रत्यय और अधिक विकसित होता है। संसार में उनकी अपने स्थान के संबंध में समझ का विकास होता है। वे इस बात को महसूस करना शुरू कर देते हैं कि वे कैसे दिखते हैं तथा वे कैसे बढ़ रहे हैं। वे अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं का सही आकलन करने लगते हैं। उनकी अपने बारे में राय बाह्य (जैसेकि शारीरिक क्षमताएं और संपत्ति) तथा आन्तरिक गुणों (जैसेकि मैं अच्छा हूँ।) दोनों पर ही निर्भर करता है।

इस अवस्था के बच्चे द्वंद्वात्मक संवेगों को प्रकट कर सकते हैं। वे जटिल संवेगों को समझने लगते हैं जैसे कि दुविधा, उत्साह, आदि। उन्हें अपने परिवार और माता-पिता से अधिक स्वतंत्र होने की आवश्यकता होती है और वे अपने साथियों से अधिक जुड़ना प्रारंभ कर देते हैं। उन्हें निजता अच्छी लगती है। अपने साथियों से बातचीत करते समय वे उनसे मुकाबला करते हैं और प्रतिस्पर्धात्मक खेल खेलते हैं। वे मित्रता और समूह कार्य पर अधिक ध्यान देते हैं। वे आगे की योजना बनाना सीखते हैं।

कुछ अन्य सामाजिक-संवेगात्मक योग्यताएँ इस प्रकार हैं-

- सही और गलत की बेहतर समझ।
- माता-पिता से अलग समय और संवेगात्मक स्वतंत्रता की चाह।
- भावनाओं पर नियंत्रण करने और उन्हें छुपाने में बेहतर होना।
- विस्तृत आत्म प्रत्यय के निर्माण की शुरूआत, अपनी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान, विशेष रूप से सामाजिक, शैक्षिक और खेल-संबंधी कौशलों के संबंध में।
- दोस्त बनाना और साथियों के साथ बातचीत करना और मित्रता बढ़ाना एवं बनाए रखना।

9.2.3 संज्ञानात्मक विकास

मध्य-बाल्यावस्था में बच्चे पहले की अपेक्षा अधिक तार्किक ढंग से सोचना प्रारंभ कर देते हैं। उनकी सोच लचीली हो जाती है लेकिन वे केवल मूर्त परिस्थितियों के बारे में ही सोच सकते हैं। अब वे किसी एक वस्तु के एक से अधिक पक्षों के बारे में सोच सकते हैं हालाँकि वे इसमें पूरी तरह कुशल नहीं हो पाते। अब वे जानी-पहचानी जगहों पर जाने वाले रास्तों को याद रख सकते हैं और उन्हें यह भी समझ आ जाता है कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कितना समय लगेगा। अब वे अपने आप स्कूल से घर वापस आ सकते हैं। संख्या, लंबाई, द्रव, सामग्री, भार, क्षेत्रफल और आयतन के संबंध में उनकी सही समझ बनने लगती है। उनकी विपरीत या पलटकर सोचने की शक्ति भी विकसित हो जाती है। इस आयु के बच्चे आत्मकेंद्रित नहीं होते।

टिप्पणी

इस अवस्था की कुछ संज्ञानात्मक योग्यताओं का सारांश इस प्रकार है:

- अनुभवों का वर्णन करने तथा अपने विचारों के बारे में बात करने की योग्यता का विकास।
- वर्तमान के साथ-साथ भूत और भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने की योग्यता का विकास।
- ध्यान देने की अवधि में वृद्धि और मुख्य बिंदु पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का विकास।
- आगे बढ़ने की योजना बनाना।
- घटनाओं पर आधारित निरीक्षण करना और पूर्वानुमान करना।
- मीडिया से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना, तथा पढ़ने एवं लिखने की योग्यता का विकास।

9.2.4 भाषायी विकास

इस अवस्था में बच्चे भाषा के प्रयोग में कुशलता प्राप्त कर लेते हैं। वे भाषा की बारीकियों को समझने और उनका उचित स्थान पर उपयुक्त प्रयोग करने की योग्यता प्राप्त कर लेते हैं। वे हास्य को समझते हैं और संवाद के कौशलों जैसे–बारी आने पर बोलना, आदि, बातों को सीख जाते हैं। वे काफी समय तक एक विषय पर बातचीत कर सकते हैं। उनके शब्द भंडार और वाक्य रचना में सुधार आ जाता है। उनके शब्द भंडार में नए-नए शब्द जुड़ते जाते हैं और वे विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उनका उपयुक्त प्रयोग करने के योग्य हो जाते हैं। वे शब्दों को सामाजिक स्तर पर प्रयोग करना सीख जाते हैं जैसे कि विभिन्न लोगों से क्या बोलना है, कैसे बोलना है जैसे कि माता-पिता, शिक्षक, भाई-बहनों और मित्रों से। वे दुरुह शब्दों को समझने में गहरी रुचि दिखाते हैं।

इस स्तर पर उनके भाषायी विकास की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

- भाषा की बेहतर समझ एवं प्रयोग
- स्पष्ट-साफ बोली में अपने विचार साझा करना
- बातचीत और वर्णन करने के कौशलों में सुधार
- वर्णित घटनाओं या वस्तुओं का दृष्टि अवबोधन
- नए शब्दों तथा अंशो की रचना करना।

पाठगत प्रश्न 9.2

पूर्व प्राथमिक अवस्था को समझने के लिए कॉलम 'अ' को कॉलम 'ब' से मिलान कीजिए–

कॉलम (अ)	कॉलम (ब)
(i) शारीरिक विकास	(क) नए शब्दों तथा अंश की रचना करता है।
(ii) सामाजिक विकास	(ख) परिचित स्थानों के नाम तथा रास्ते याद रख सकता है।

(iii) संवेगात्मक विकास	(ग) प्रतिस्पर्धा में भाग लेना है।
(iv) भाषीय विकास	(घ) द्वंद्वात्मक संवेगों को भाषा से स्पष्ट कर सकता है।
(v) संज्ञानात्मक विकास	(ङ) 1 से 3 इंच तक प्रति वर्ष बढ़ता है।

9.3 बच्चों के विकास में खेल का महत्व

खेल बच्चों को ऐसे अनेक मूल्यवान अवसर देते हैं जिनसे उनके विकास और सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रमाण बताते हैं कि खेल शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक और बौद्धिक आदि विकास के विभिन्न आयामों को सीखने में मदद करते हैं। खासतौर से प्रथम तीन वर्षों में सुनने, देखने, छूने, चलने और सूँघने के माध्यम से खेल बच्चों की सीखने में सहायता करते हैं। खेल के दौरान बच्चों की सामाजिक कुशलताओं और संवेगात्मक परिपक्वता में वृद्धि होती है।

खेल सभी बच्चों के विकास का एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंग है। खेल बच्चे के लिए समाजीकरण, सोचने, समस्या समाधान, परिपक्वता आदि के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण आनन्ददायी क्रिया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था से जुड़े सभी लोगों को खेल का महत्व तथा खेल आधारित गतिविधि करने की जानकारी होनी चाहिए। फ्रॉबेल के अनुसार, खेल बच्चे के लिए कोई मामूली प्रक्रिया नहीं बल्कि एक गम्भीर कार्य है जो बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। मारिया मॉन्टेसरी ने भी स्वतंत्र तथा स्वभाविक खेलों को बच्चों के विकास के लिए महत्वपूर्ण क्रिया माना है। पियाजे खेल को आनन्द के लिए दोहरायी गयी प्रतिक्रियाओं से परिभाषित करते हैं।

छोटे बच्चों में अपने आस-पास के जीवन को जानने, समझने, और उसका अन्वेषण करने की जिज्ञासा बनी रहती है। छोटे बच्चों के लिए भौतिक और सामाजिक क्षेत्र के रहस्यों को जानने के लिए खेल प्रमुख साधन होते हैं। खेल के द्वारा बच्चे आपस में सहयोग करना तथा अपने विवादों को सुलझाना सीखते हैं। खेलों के माध्यम से बच्चे भौतिक साधनों, उपकरणों और परम्पराओं के महत्व का भी ज्ञान प्राप्त करते हैं।

आइए, प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास में खेल के महत्व को जानते हैं–

- खेल साक्षरता के लिए आधार तैयार करता है। खेल के द्वारा बच्चे नई ध्वनियाँ बनाना एवं प्रयोग करना सीखते हैं। वे अपने आप तथा अपने मित्रों या साथियों के साथ नए शब्दों का प्रयोग करना सीखते हैं तथा अपनी कल्पनाशीलता का प्रयोग करते हैं।
- बच्चे खेल से सीखते हैं। खेल द्वारा बच्चे के विकास में सहायता मिलती है तथा यह शिशु की सीखने की जन्मजात आवश्यकता की पूर्ति करता है। खेल के अनेक प्रकार हैं, यह झुनझुने हिलाने से लेकर, छुपन छुपाई तक कुछ भी हो सकते हैं। खेल बच्चे द्वारा अकेले, किसी साथी के साथ, समूह में या किसी वयस्क के साथ खेला जा सकता है।

टिप्पणी

- खेल बच्चों को चुनने का अवसर देता है। पर्याप्त गतिविधियों तथा खिलौनों में से चुनकर बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलते हैं।
- खेल बच्चों को शारीरिक क्रियाएँ करने, संतुलन बनाने तथा अपनी क्षमताओं को परखने के अवसर प्रदान करता है।
- खेल द्वारा बड़ों को अपने बच्चों की शारीरिक भाव–भंगिमा को समझने में सहायता मिलती है।
- खेल एक आनन्ददायी प्रक्रिया है, अपने आप तथा दूसरों के साथ बेहतर ढंग से खेलना सीखने से बच्चा संतुष्ट होता है तथा सामाजिक बनता है।

आइए, बच्चों में समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल के महत्व का अध्ययन करते हैं।

शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

शारीरिक विकास के लिए खेल आवश्यक है। खेल के अभाव में शरीर का सामान्य विकास नहीं हो पाता। मोटापे और प्रेसेस्ड फूड के जमाने में घूमना, दौड़ना, खेलों में भाग लेना बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी जीवन्तता के लिए बहुत आवश्यक है। खेलों में बच्चों की शारीरिक सक्रियता अधिक होने के कारण बच्चों का स्थूल तथा सूक्ष्म क्रियात्मक विकास एवं शारीरिक क्रियाओं के प्रति चैतन्यता का विकास होता है। लिखने के उपकरण जैसे मार्कर आदि का प्रयोग खेल के द्वारा सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास का एक उदाहरण है। सूक्ष्म माँसपेशियों के प्राकृतिक विकास में बच्चा पहले किसी निश्चित आकृति में क्रेयॉन चलाना सीखता है फिर धीरे–धीरे वह इच्छित आकृति तथा चित्र बनाने लगता है। स्थूल माँसपेशीय विकास जैसे–कूदना व उछलना भी इसी ढंग से होता है। जब बच्चे कूदना सीखते हैं तो वे किसी भी पैर से सिर्फ आनन्द के लिए कूदते हैं। खेल के दौरान शरीर के गतिविधियों द्वारा बच्चे में शारीरिक आत्म–निर्भरता आती है तथा वे सुरक्षित एवं साहसी बनते हैं। खेल बच्चों की ऊर्जा को बाहर निकालने का एक सशक्त माध्यम है। इससे बच्चों की छोटी तथा बड़ी माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं तथा उनमें शक्ति एवं सुदृढ़ता का संचार होता है। खेल, बच्चों के सूक्ष्म एवं वृहद गतिक कौशलों को सशक्त करता है तथा उनकी ताकत और आंतरिक बल को बढ़ावा देता है।

सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास

बच्चों के सामाजिक विकास हेतु खेल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। खेल के दौरान, बच्चों की सामाजिक क्षमताओं तथा संवेगात्मक परिपक्वता का भी विकास होता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि किसी विद्यालय की सफलता मुख्य रूप से वहाँ के बच्चों की आपसी अंत:क्रियाओं तथा साथी समूह एवं बड़े लोगों के साथ क्रियाओं की सकारात्मकता पर निर्भर करती है। खेल के दौरान बच्चा अपने चारों ओर के वातावरण द्वारा नियंत्रित होता है जिससे उसमें आत्म–सम्मान बढ़ता है। बच्चा अनेक प्रकार की गतिविधियों में भाग लेता है जिससे वह अनेक नए संवेगों को महसूस करना सीखता है। चूँकि खेल में बच्चा अपनी भावनाओं को उजागर करता है वह खुशी, उदासी, क्रोध, भय, उत्तेजना, अवसाद तथा तनाव जैसी भावनाओं

टिप्पणी

को नियंत्रित करना सीखता है। खेल बच्चे की एकाग्रता को बढ़ाता है तथा दूसरों के साथ सहयोग करना भी सिखाता हैं। खेलों के द्वारा बच्चे एक-दूसरे को समझने की कला सीखते हैं, अपनी भूमिका का निर्धारण करते हैं, नियमों का पालन करना सीखते हैं तथा सामूहिक सक्रियता का पाठ भी सीखते हैं। अपनी भूमिका का स्वयं निर्धारण करके वे मित्रता की भावना का विकास करते हैं और इस प्रकार खेल, बच्चों के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि सिद्ध होते हैं।

संज्ञानात्मक विकास

खेल के द्वारा बच्चे आवश्यक अवधारणाओं जैसे–गिनती, रंग, तथा समस्या समाधान आदि के बारे में सीखते हैं। खेलने और विभिन्न खेलों में भाग लेने से उनकी सोचने और तर्क करने की शक्ति में सुधार होता है। क्योंकि बचपन में खेल भी बच्चों के लिए काम है, इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों में उपरोक्त नये कौशलों के विकास के लिए उन्हें खेलों में व्यस्त रखा जाए।

भाषिक विकास

खेल बच्चों को उनकी भाषा के अनेक नियमों को आत्मसात करने में मदद करता है। इसलिए खेल में संप्रेषण आवश्यक है। यह बच्चों को उनकी सोच को व्यक्त करने के अनेक तरीके भी सुझाता है। खेल के दौरान बच्चा अलग-अलग लोगों से अलग-अलग स्थितियों में अनेक उद्देश्यों के लिए भाषा का प्रयोग सीखता है। अन्य लोगों के साथ खेलते समय बच्चा प्रायः खेल सामग्री के बारे में बात करता है या प्रश्न पूछता है। खेल के दौरान बच्चा जानकारी प्राप्त करता है या अन्य लोगों को जानकारी देता है, विचारों को व्यक्त करता है नयी भाषा सीखता है। प्रत्येक आयु वर्ग के बच्चे भाषा के खेल पसन्द करते हैं क्योंकि ऐसा करने से उन्हें अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं। खेल उनके लिए शब्दों (पाठ्यक्रम, ध्वनियों एवं व्याकरण) को समझने तथा प्रयोग करने का एक माध्यम है। प्रारम्भिक विद्यालयी बच्चों के लिए भाषिक खेल, चुटकुलों, पहेलियों, तथा रस्सी पर कूदने के रूप में हो सकते हैं।

कला तथा सौन्दर्यबोध

बच्चे के विकास तथा अधिगम में रचनात्मक विचारों एवं अभिव्यक्ति की भूमिका के बारे में हम चर्चा कर चुके हैं। लगभग 50 वर्ष पूर्व, सिगमण्ड फ्रॉयड (1958) ने बताया कि खेल के दौरान ''प्रत्येक बालक एक रचनाकार की तरह व्यवहार करता है, तथा वह अपने संसार की रचना स्वयं करता है, या अपने संसार की उन चीजों को पुनर्व्यवस्थित करता है, जो उसे अच्छी लगती हैं।'' प्रत्येक रचनाशील व्यक्ति भी इसी प्रकार कार्य करता है। खेल बच्चे को वातावरण में उपस्थित चीजों में सौंदर्य तलाशने तथा सुन्दर ढंग से उन्हें प्रयोग करने का अवसर प्रदान करता है।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा कि–

- उसे 6 साल के बच्चों की वृद्धि और विकास में एक प्रकार की स्थिरता रहती है। इस

टिप्पणी

समय उनकी सूक्ष्म एवं वृहद मांसपेशियाँ विकसित होती हैं जिससे उनकी शारीरिक मजबूती बढ़ती है।

- शारीरिक क्षमता बढ़ने से उसे 6 साल तक के बच्चे दिन-प्रतिदन के कार्यों–जैसेकि अपने आप भोजन करना, बटन लगाना, कपड़े पहनना, जूतों के फीते बाँधना आदि कार्य बेहतर ढंग से करने लगते हैं।
- पूर्व-विद्यालयी बच्चे अपना नाम, परिवार के लोगों के नाम तथा अपनी वस्तुओं के नाम बताना सीख जाते हैं।
- पूर्व-विद्यालयी बच्चों में सोचने और समझने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती, परन्तु वे मूर्त स्थितियों को सहज तार्किक क्षमता द्वारा समझने लगते हैं जोकि वस्तुओं को बाह्य दिखावट से संरचित होते हैं।
- पूर्व-विद्यालयी बच्चों में शब्दों को समझने तथा सामाजिक बातों को जानने की क्षमता का तेजी से विकास होता है।
- मध्य बाल्यावस्था के दौरान बच्चे अपने शरीर पर नियंत्रण करना सीखते हैं।
- 6 से 8 साल के बच्चों को अपनी शारीरिक क्षमता का ज्ञान हो जाता है, उनका आन्तरिक विकास होने लगता है। इस समय वे अपने बारे में और अधिक जानने लगते हैं।
- मध्य बाल्यावस्था में बच्चों में तर्क शक्ति का विकास हो जाता है, पर वे वस्तुओं को पहचान नहीं पाते। उनमें पलटकर सोचने, संरक्षण तथा अमूर्त चिंतन की क्षमता नहीं होती और न ही सोचने समझने की शक्ति होती है।
- 6 से 8 साल के बच्चे भाषा में कुशलता प्राप्त कर लेते हैं। वे बेहतर रचनाशील वाक्य बना लेते हैं।
- खेल बच्चों का समग्र विकास करते हैं। खेलों से विकास के सभी आयामों में वृद्धि होती है।

पाठान्त प्रश्न

1. खेल का क्या अर्थ है? छोटे बच्चों के विकास में खेल की भूमिका की चर्चा कीजिए।
2. पूर्व विद्यालयी बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न पक्षों का वर्णन कीजिए।
3. सात वर्ष के बच्चों की नीचे दिए गए आयामों की कुशलताओं की सूची तैयार कीजिए–

   (i) संज्ञानात्मक

   (ii) भाषिक

   (iii) सामाजिक-संवेगात्मक

4. 3 वर्ष तथा 6 वर्ष के बच्चों के विकासात्मक पड़ावों का तुलनात्मक चार्ट बनाइए।

5. नीचे लिखे विषयों का संक्षेप में परिचय दीजिए–

   (i) प्रतीकात्मक विचार

   (ii) स्थानिक चिन्तन

   (iii) कार्य कारण सम्बन्ध

   (iv) वर्गीकरण और पहचान

   (v) निजी संभाषण

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

(क) एनीमिस्म

(ख) वर्गीकरण

(ग) तीव्र प्रतिचित्रण

(घ) व्यवहारशीलता

9.2

(i) (ङ)

(ii) (ग)

(iii) (घ)

(iv) (क)

(v) (ख)

संदर्भ

- Berk, L. (2012). Child Development (9th Edition). Pp 174-222. Prentice Hall of India.
- Hurlock, E.B. (2007). *Developmental Psychology: A life -span approach.* New Delhi: Tata McGraw-Hill.
- Mukunda, K. (2009). *What Did You Ask at School Today? A Handbook of Child Learning.* New Delhi: Harper Collins.

टिप्पणी

- Papalia, D. E; Olds, S.W., Feldman, R. D.(2006). *Human Development (9th Ed).* New Delhi: Tata McGraw- Hill.
- Ranganathan, N. (2000). *The Primary School Child: Development and Education.* New Delhi: Orient Blackswan.
- Singh, A (Ed). (2015). *Foundations of Human Development*. New Delhi: Orient Blackswan.